दर्शन पाठ भाषा

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरणजी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरणजी ॥
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिण्यों हितकार जी॥
भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‌यो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो॥
धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो॥।
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरे।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरै॥
मिट गयो तिमिर-मिथ्यात मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो।
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, बीनऊँ तुव चरणजी॥
सवोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारण तरणजी।
जाचूं नहीं सुरवास पुनि, नर राज परिजन साथ जी।
'बुध' जांचहूँ तुव भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी॥